

पश्चिम रेलवे



भावनगर मंडल



सोमनाथ मंदिर

सोमनाथ

(पर्यटन विशेषांक)

(ई-पत्रिका, "ई-सोमनाथ")

मार्च – 2024

अंक-7

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
01	संरक्षक की कलम से - श्री रवीश कुमार , मंडल रेल प्रबंधक	3
02	परामर्शदाता की कलम से - श्री हिमांशु शर्मा , अमुराधि एवं अमरेप्र	4
03	संपादक की कलम से - श्री राम सिंह , राधि एवं सकाधि-II	5
04	पालीताणा – श्री हार्दिक धींग , वरिष्ठ लिपिक	6 - 7
05	पर्यटन – भाविन कुमार चावडा, लिपिक, या.निरी.कार्या. –पोरबंदर	8 - 9
06	हिमालय - श्री राम सिंह , राधि एवं सकाधि-II	10 - 11
07	यहाँ की गलियाँ भी महकती हैं (कन्नौज) – डॉ. एन. आर. बैरवा	12 - 15
08	धार्मिक पर्यटन स्थल - तिरुपति एवं तिरुमला- संतोष कुमार वर्मा	16 - 20
09	तब ईश्वर याद आते हैं - श्री हार्दिक धींग , वरिष्ठ लिपिक	21
10	विशेष कार्य – भावनगर मंडल	22 - 34
11	विशेष कार्य – राजभाषा विभाग	35

संरक्षक
श्री रवीश कुमार
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्शदाता
श्री हिमांशु शर्मा
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

संपादक
श्री राम सिंह
राजभाषा अधिकारी एवं
सहायक कार्मिक अधिकारी-II

संपादन सहयोग :

श्री धर्मवीर	वरिष्ठ अनुवादक
श्री परेश मजीठिया	वरिष्ठ अनुवादक
श्री संजीव कुमार झा	वरिष्ठ अनुवादक
श्री भरत डाभी	कार्यालय अधीक्षक
श्री शम्भू सिंह	जनसंपर्क निरीक्षक

राजभाषा विभाग
मंडल रेल प्रबंधक-कार्यालय,
भावनगर परा

(ई-पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख अथवा सूचना / जानकारी आदि के लिए संपादक मंडल जिम्मेदार या संबंधित नहीं है, इसमें व्यक्त विचार / लेख आदि लेखक के अपने हैं।)

संरक्षक की कलम से



भावनगर मंडल की ई-पत्रिका “ई-सोमनाथ” के अंक-7 को आप के हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी में प्रकाशित होने वाली हमारी यह ई-पत्रिका इस मंडल के अधिकारियों / कर्मचारियों व इनके परिवारजनों की सृजनात्मक और साहित्यिक रुचि को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।

आज के डिजिटल युग को ध्यान में रखते हुए “ई-सोमनाथ” के माध्यम से आप तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

यह राजभाषा पत्रिका रचनात्मक लेखों का संकलन मात्र ही नहीं है, बल्कि मंडल में व्याप्त वैचारिक समरसता, समभाव, प्रगतिशील, सृजनशीलता आदि की सकारात्मक शक्तियों की संवाहक भी है।

आशा है कि “ई-सोमनाथ” का यह अंक आपको पसंद आएगा और इसमें दी गई जानकारी आप सभी पाठकों में जागरूकता का प्रसार करने में एक अहम भूमिका निभाएंगी।

रवीश कुमार

मंडल रेल प्रबंधक

भावनगर परा

परामर्शदाता की कलम से . .



भावनगर मंडल की ई-पत्रिका “ई-सोमनाथ” का अंक-7 आपके सामने प्रस्तुत है। हमारी यही कोशिश रही है कि अधिकारी, कर्मचारी और उनके परिवारजन अधिक संख्या में भाग लें।

राजभाषा हिंदी को समृद्ध, व्यापक तथा लोकप्रिय बनाने के लिए हम सब का सक्रिय योगदान बहुत ही आवश्यक है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाना एक महत्वपूर्ण कार्य है तथा राजभाषा हिंदी तो संपर्क भाषा के रूप में एक सफल भूमिका निभाती रही है।

“ई-सोमनाथ” के बेहतर प्रकाशन के लिए आपके बहुमूल्य विचारों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

हिमांशु शर्मा
अमुराधि एवं अमंरेप्र
भावनगर परा

संपादक की कलम से



भावनगर मंडल की ई-पत्रिका “ई-सोमनाथ” का अंक-7 आप सभी प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण में भाषा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा के माध्यम से साहित्य का सृजन होता है, जो सांस्कृतिक विकास का आधार है। भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक विकास की अभिव्यक्ति की जा सकती है।

साहित्य, हमारे मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है और जहां पर शब्द हमारी ऊर्जा का संचरण करते हैं, वहीं भाषा के रूप में लिपिबद्ध शब्द हमारे विचारों को व्यवस्थित करते हैं।

हमारा मूल उद्देश्य अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना है।

मैं, पत्रिका प्रकाशन के लिए आप सभी प्रबुद्धजनों से निरंतर रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा रखता हूँ ताकि पत्रिका का प्रकाशन निर्बाध रूप से जारी रह सके।

राम सिंह
राजभाषा अधिकारी एवं
सहायक कार्मिक अधिकारी-II,
भावनगर परा



हार्दिक धींग ,
वरि. लिपिक
वाणिज्य विभाग

पालीताणा

धार्मिक स्थल पालीताणा

अवकाश का दिन था और मैं अपने परिवार के साथ निकल पड़ा था, भावनगर शहर से 50 किमी की दूरी पर स्थित पालीताणा शहर की ओर। एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थल पालीताणा। पालीताणा शत्रुंजय नदी के किनारे बसा जैन मंदिरों से सुशोभित शहर है। पालीताणा शत्रुंजय की पहाड़ियों पर स्थित (लगभग 3500 सीढ़ियों की ऊंचाई पर) हजारों जैन मंदिरों, एवं उनकी वास्तुकला के लिए जाना जाता है।

शत्रुंजय की पहाड़ियों पर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का मुख्य मंदिर है। इसके अतिरिक्त लगभग 1000 से ज्यादा अन्य छोटे मंदिर इस पहाड़ी पर स्थित है। पहाड़ पर स्थित मंदिर की यात्रा सुबह 4 बजे से शुरू हो जाती है। सभी यात्री अपने समय अनुसार यात्रा शुरू करते हैं।

जैन लोगों के बीच यह मान्यता है कि उनके जीवनकाल में एक बार पालीताणा मंदिर की यात्रा से उन्हें निर्वाण (जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) की प्राप्ति होती है।

पालीताणा पर की जाने वाली महत्वपूर्ण यात्रा:

पालीताणा पर लोगों द्वारा अपने अनुसार यात्रा की जाती है। लगभग 3500 सीढ़ियों को चढ़कर मुख्य मंदिर भगवान ऋषभदेव के मंदिर पहुंचते हैं। रास्ते में कई दरवाजे (राम पोल, हाथी पोल) आते हैं।

नव्वाणु यात्रा:

पालीताणा पर नव्वाणु यात्रा जैनियों द्वारा की जाने वाली सबसे प्रचलित यात्रा है जिसमें लगभग 3 माह में शत्रुंजय तीर्थ की 99 यात्रा(प्रतिदिन लगभग 3 यात्रा) की जाती है। यह यात्रा बहुत कम उम्र से लेकर काफी उम्रदराज सभी उम्र के लोगों द्वारा की जाती है।

छट यात्रा:

इसे पालीताणा पर की जाने वाली सबसे कठिन यात्रा बोला जा सकता है। इस यात्रा में 2 दिवस में 7 बार पालीताणा की यात्रा की जाती है। इस यात्रा को करने वाले व्यक्ति द्वारा यात्रा के दोनों दिवस में अन्न एवं जल किसी का ग्रहण नहीं किया जाता है।

फागुन तेरस:

यह यात्रा फाल्गुन माह की तेरस को (होली से पहले) की जाती है। इस दिन पहाड़ पर 6 गावों की यात्रा की जाती है। इस दिन यात्रा करने लाखों लोग बाहर से आते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन यात्रा से भी मोक्ष प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त कई प्रकार के तप-तपस्या (उपधान, वर्षीतप, आयंबिल, ओली जी) जैन ऋषि मुनियों एवं लोगों द्वारा की जाती है।

कैसे पहुंचे पालीताणा-

रेल मार्ग द्वारा:

पालीताणा स्टेशन: यह छोटा स्टेशन होने से बहुत कम ट्रेन सीधे यहां तक मिल पाती है। समीपस्थ मुख्य स्टेशन भावनगर से 50 किमी दूर होने से वहां से सीधी ट्रेन यहां के लिए मिल जाती है।

सोनगढ़ रेलवे स्टेशन:

पालीताणा से 35 किमी दूर सोनगढ़ रेलवे स्टेशन है। जहां से कई वाहन पालीताणा के लिए मिल जाते हैं।

भावनगर टर्मिनस रेलवे स्टेशन: (पालीताणा से 50 किमी दूर)

भावनगर टर्मिनस रेलवे स्टेशन पालीताणा के समीप स्थित एक मुख्य रेलवे स्टेशन है। विभिन्न शहरों से भावनगर स्टेशन पहुंच कर बस अथवा निजी वाहन पालीताणा के लिए मिल जाते हैं।

बस मार्ग:

गुजरात के कई शहरों से सीधी बस सुविधा भी पालीताणा के लिए आसानी से मिल जाती हैं, जिसे GSRTC एप्लीकेशन के माध्यम से देखा एवं बुक किया जा सकता है।

हवाई मार्ग

भावनगर हवाई अड्डा

भावनगर एयरपोर्ट पर मुंबई एवं पुणे से सीधी फ्लाइट उपलब्ध है, जबकि वडोदरा एवं अहमदाबाद समीपस्थ हवाई अड्डे हैं।

समुद्र मार्ग -

रो-रो फेरी की सहायता से सूरत से भावनगर तक आसानी से पहुंचा जा सकता है, जिसकी बुकिंग ऑनलाइन की जा सकती है। उसके बाद भावनगर से रेल मार्ग, निजी वाहन अथवा बस के माध्यम से पालीताणा पहुंचा जा सकता है।

कहां रुके:

पालीताणा शहर में जैन संघों द्वारा विभिन्न धर्मशालाओं का निर्माण करवाया गया है। साथ ही शहर में कई भोजनशालाएं भी स्थित हैं, जहां पर बहुत कम मूल्य में शुद्ध सात्विक भोजन उपलब्ध करवाया जाता है।



भाविन कुमार चावड़ा
लिपिक
यातायात निरीक्षक-कार्यालय,
पोरबंदर

“पर्यटन”

“हमारा विश्व एक पुस्तक है और जो लोग यात्रा नहीं करते हैं, वे इसका केवल एक पेज पढ़ पाते हैं।” सेंट ऑगस्टिन का यह कथन, वास्तव में यात्रा की भावना को बताता है।

पर्यटन के प्रकार में मनोरंजन पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, विरासत विशेष पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, धार्मिक पर्यटन व वन्यजीव पर्यटन आदि आते हैं। यहाँ मैं उस पर्यटन स्थल के बारे में बताना चाहता हूँ जो कि उपरोक्त प्रकार में से ज्यादातर प्रकार से संबन्धित है। मैं यहाँ अपनी जन्मभूमि स्थल “जूनागढ़” पर्यटन स्थल के बारे में बताने के साथ-साथ गौरवपूर्ण तरीके से हमारे गुजरात-पर्यटन के ब्रांड एम्बेसडर एवं भारतीय फिल्म जगत के अनुभवी एवं नामी कलाकार की कुछ पंक्ति को हमारे जूनागढ़ पर्यटन स्थल के साथ जोड़ते हुए लिखी हैं “जूनागढ़ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा”

जूनागढ़ इतिहास की झाँकी दिखाता हुआ एक अनमोल ऐतिहासिक शहर है। यह नाम ‘जूनागढ़’ प्राचीन भारतीय इतिहास के साथ आधुनिक भारत इतिहास के साथ भी जुड़ा हुआ है। इस शहर की खासियत यह है की यह किसी भी एक धर्म-संप्रदाय के साथ नहीं बांधा जा सकता। यह जितना बौद्ध कालीन इतिहास के साथ जैन इतिहास, इस्लामिक इतिहास एवं हिन्दू धर्म के इतिहास के साथ जुड़ा हुआ है। उतना भीतर न जाते हुए मैं यहाँ के उस पर्यटन स्थल के बारे में बताना चाहता हूँ जो दुनिया में भी बहुत मशहूर है। जूनागढ़ के सासनगिर में स्थित गिर राष्ट्रीय उद्यान, अफ्रिका के जंगलो के अलावा दुनिया की दूसरी ऐसी जगह है, जहाँ अबाध भ्रमण करते हुए बब्बर शेरों को देखा जा सकता है। यहाँ का पूरा जंगल शुष्क और पतझड़ी है जो एशियाई शेरों के लिए उपयुक्त है इसलिए यहाँ गिर वन्य जीव अभ्यारण घोषित किया गया। शेर और तेंदुए इस उद्यान के मुख्य आकर्षण केंद्र हैं। इसके अलावा आप सांभर हिरण, चोवसिंघा (दुनिया का एक मात्र चार सिंग वाला मृग) सियार,

भारतीय लोमड़ी, लकड़बग्घा आदि प्रजातियां देख सकते हैं। सासणगिर में प्रकृति की गोद में स्थित अत्यंत सुंदर एक रेलवे स्टेशन है। यह जूनागढ़ से 72 कि.मी की दूरी पर है। इस मीटर गेज ट्रेन द्वारा यात्रा से एक नए आनंद की अनुभूति होती है। बरसात के मौसम में कुदरती सुन्दरता का अद्भुत नजारा देखने को मिल सकता है इसलिए पर्यटक निकटतम रेलवे स्टेशन जूनागढ़ या वेरावल से भी जा सकते हैं। साथ ही जूनागढ़ और आस-पास के घूमने लायक जगहों की सूची दी है। इन सभी जगहों का अनुभव एक-दूसरे से अलग है इसलिए सभी जगहों का पर्यटन अवश्य करना चाहिए।
जैसेकि :-

- 1) उपरकोट किला (ऐतिहासिक स्थल)
- 2) नवघन कुवो -अडी-कडी वाव
- 3) अशोक शिलालेख :14 आज्ञाओं को संग्रह
- 4) बौद्ध गुफाएं
- 5) सक्करबाग प्राणी उद्यान,
- 6) मोहब्बत मकबरा.
- 7) स्वामी नारायण मंदिर
- 8) दरबार होल संग्रहालय
- 9) वेलिंगटन बांध,
- 10) जटा-शंकर महादेव मंदिर
- 11) मोतीबाग
- 12) जामा मस्जिद
- 13) दातार पर्वत
- 14) गिरनार पर्वत (उड़न-खटोला रोप-वे) अंबाजी माताजी मंदिर
- 15) जैन मंदिर
- 16) दामोदर कुंड आदि ...

उपरोक्त लेख एवं मेरे स्वयं के अनुभवों से आप सभी पाठकों को जूनागढ़ के कुदरती वातावरण में जीवन में कम से कम एक बार पर्यटन के लिए आमंत्रित कर सकता हूँ । धन्यवाद ॥



राम सिंह
राधि एवं सकाधि-II

हिमालय

मैं, बहुत दिनों से सोच रहा था कि हिमालय के बारे में कुछ लेख तैयार करूँ और उन पर कुछ शोध करूँ। हिंदुकुश से अरुणाचल प्रदेश तक हिमालय के महात्म्य को शब्द और वाणी से व्यक्त करना निश्चित ही कठिन कार्य है। विभिन्न रुचि के लोगों को हिमालय के पर्वत शिखर, पवित्र नदियाँ, गुफाएँ, विस्तृत जंगल, वन्य जीव, अनेक प्रकार के सुंदर पुष्प और तीर्थ स्थल हमेशा ही आकर्षित करते रहे हैं। कवि, प्रकृति प्रेमी, पर्वतारोही, साधक हो या फिर आराम चाहने वाली आधुनिक पीढ़ी, सभी को हिमालय समान रूप से आनंद और शांति परिपूर्ण कर देता है।

मेरी भी बड़ी इच्छा हुई कि कुछ दिन एकांत में जाकर, कोलाहल और गर्मी से दूर ऋषि-मुनि, तपस्वियों, योगियों के तप से पवित्र हुए पावन गिरिराज के शिखरों के दर्शन करूँ।

एक रविवार की रात को जब मैं, अपने बिस्तर पर पहुँचा तो थकावट के कारण तुरंत ही नींद आ गई और मैं, एक अनोखे सपने में खो गया। मैंने अपने सपने में देखा कि चीड़ के घने जंगलों से होता हुआ सर्पिल रास्ता, कभी चढ़ाव, फिर उतराव, आते-जाते वाहन। यह सब अत्यंत ही आनंददायक था। वहाँ सभी बगीचे सेब से लदे थे, जो मेरा मन मोह रहे थे। मैंने गंगोत्री के दर्शन किए फिर मैं, गोमुख के लिए चला। भागीरथी के किनारे-किनारे, अनेक जगहों पर चढ़ाई और बड़े बड़े पत्थर, कहीं कहीं पर बिलकुल ही चढ़ाई है। हालाँकि मैं, गंगोत्री की ऊँचाई से गोमुख की ऊँचाई पर चढ़ने के लिए प्रयासरत रहा। इस यात्रा में असीम शांति, उत्साह और रोमांच मुझमें आ गया। भागीरथी का कल-कल करता हुआ स्वर, हिमाच्छदित शिखर, बड़ी-बड़ी चट्टानें, छोटे-छोटे लकड़ी के पुल, सब कुछ एक जादू जैसा लगता है।

मैं स्वयं ही आनंद से पूरित हो चल रहा था। बर्फीली ठंडी हवाएँ निरंतर बह रही थी। मैंने, यह यात्रा पूरी कर ली और चीड़वासा पहुंचा। वहाँ पर चीड़ के बहुत पेड़ हैं। कुछ क्षण के पश्चात मैंने अपनी यात्रा फिर शुरू की, शाम तक मैं गंगोत्री वापस पहुँच जाऊँ पर थोड़ा आगे जाने पर ही बहुत तेजी से हवाएँ चलनी शुरू हो गई। मैं, जैसे-तैसे भोजवासा तक गया। मैंने फैसला किया कि कुछ दिन भोजवासा में ही व्यतीत किए जाएँ। उस वीराने में जहाँ स्वयं को ले जाना ही कठिन कार्य है, कुछ भी प्रबंध करना निश्चित ही बड़ा परिश्रम का कार्य है।

अगले दिन मैं, गोमुख के लिए चला। भोजवासा से गोमुख का रास्ता बहुत ही कठिन है। भागीरथी के तीव्र वेग के साथ बह कर आए बड़े-बड़े पत्थर हैं, जिनमें से कूद-फांद कर जाना पड़ता है। सामान ले जाने के लिए कुछ लोग अवश्य मिल जाते हैं। यहाँ पर पहाड़ भुर-भुरे हैं। कोई जानवर यदि पहाड़ के ऊपर चल रहा हो तो पत्थर गिरने का खतरा होता है। कभी-कभी जंगली भेड़ अपने समूहों में वहाँ पर दिखते हैं। गोमुख ग्लेशियर का आकार और परिदृश्य बदलता रहता है।

बड़ी बड़ी चट्टानें, गंगा का मुहाना, बर्फ से ढके पहाड़ और प्रकृति का निरंतर मधुर संगीत, सब कुछ आनंददायक है। यहाँ पर शांत प्रकृति का अनुभव किया जा सकता है। कुछ क्षण तक वहाँ के असीम सौंदर्य का आनंद लेकर मैंने गंगोत्री के लिए प्रस्थान किया। मुझे एहसास हुआ तो मैं काफी दूर आ गया था। अब एक विकल्प था कि वापस जाकर सही रास्ता पकड़ूँ या फिर खड़ी पहाड़ी पर चढ़ाई करूँ। मैं जैसे-तैसे कंटीली झाड़ियों से बचते हुए पहाड़ी को पार कर गया और फिर आखिरकार शाम होते-होते मैं गंगोत्री पहुँच ही गया और फिर वहाँ से वापस उत्तरकाशी।

इस प्रकार मेरी इस यात्रा ने मुझे कई स्मृतियाँ दी। ये थोड़ा अलग विचार अवश्य था पर साथ ही अत्यंत रोमांचक और आनंददायक भी रहा।



डॉ. एन. आर. बैरवा,
स. मं. इंजीनियर
भावनगर परा

यहाँ की गलियाँ भी महकती हैं (कन्नौज)

मेरे फुफेरे साले साहब इंद्रानगर, मुंशी पुलिया के पास, लखनऊ शहर में रहते हैं। मुझे एक बार आरडीएसओ जाना हुआ। उस दिन शाम को एकदम से सोचा क्यों न मौके फायदा उठाते हुए “इत्र नगरी” कन्नौज ही घूम आए; तो बस कर ली तैयारी और तैयारी में क्या, बस कुछ अत्यावश्यक सामान जिसमें पानी की बोतल, सेनेटाईज़र, मास्क, आधार कार्ड एवं अन्य कुछ नाश्ता। इसके बारे में नाम तो बहुत सुना था लेकिन कन्नौज कभी जाना नहीं हुआ था। हर इंसान घुमक्कड़ी होता है, सबकी इच्छा कही न कही घूमने की होती ही है किसी कि पास तो किसी को दूर। अंततः ट्रेन से जाना निर्धारण हुआ। ट्रेन में सफर के दौरान हमारे पास में एक सज्जन बैठे थे उनसे मैंने थोड़ी हाय-हेल्लो की तो पता चला कि, वो भी कन्नौज के ही मूल निवासी है, तो मैंने उनसे जानकारी मांगी कि, आपके शहर में क्या-क्या घुमक्कड़ी की जा सकती है तो, उन्होंने मुझे बाबा गौरी शंकर मन्दिर, फूलमती देवी मन्दिर, जयचंद का किला, मेहंदी घाट, माँ अन्नपूर्णा देवी मंदिर, मखदूम जहानिया का नाम विशेषतः बताया। अब मैं ठहरा भुलक्कड़ तो ये सब मैंने मोबाइल में ही नोट कर लिया और अब मैं इत्र नगरी कन्नौज शहर के आने का इंतज़ार करने लगा।

उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है कन्नौज, यहाँ आना अत्यन्त आसान है। ‘इत्र नगरी’ कन्नौज की दूरी उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लगभग 125 किलोमीटर, कानपुर से लगभग 85 किलोमीटर, हरदोई से 60 किलोमीटर तथा फरुखाबाद शहर से भी लगभग 60 किलोमीटर है। कन्नौज, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य स्थित एक नगर एवं जिला मुख्यालय भी है। इस शहर का नाम मूल रूप से संस्कृत के ‘कान्यकुब्ज’ शब्द से बना है। कन्नौज एक प्राचीन नगरी है एवम् कभी हिंदू साम्राज्य की राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। कन्नौज गंगा के बायीं ओर गैंड ट्रंक रोड से लगभग 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। किसी समय गंगा नदी इस नगर के पार्श्व से बहती थी। माना जाता है कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण यहीं के मूल निवासी रहे हैं। कन्नौज अपने मन्दिरों के लिये विशेष जाना जाता है। कन्नौज प्रमुख रूप से सिद्धपीठ बाबा गौरी शंकर मन्दिर एवं सिद्धपीठ माँ फूलमती मंदिर के लिये जाना जाता है। इसके अलावा यहाँ अनेकों मन्दिर हैं, जो इस नगर की छवि को और अधिक आकर्षक बनाते हैं। कन्नौज पहुँचने पर हमने लोकल टेक्सी किराए पर रख ली ताकि सभी महत्वपूर्ण स्थलों का लुत्फ उठाया जा सके। आइये, मैं आपको मेरी कन्नौज यात्रा का अनुभव प्रस्तुत करता हूँ।

आइये, यहाँ के कुछ दर्शनीय स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं -

गौरी शंकर महादेव मंदिर : शहर का सबसे प्रसिद्ध मन्दिर है । अगर आप कभी भी कन्नौज घूमने आये तो आप इस मन्दिर में दर्शन हेतु अवश्य जाये यह मंदिर बेहद ही सुन्दर बना है और मुख्य रूप से भोलेनाथ का मंदिर है । मन्दिर प्रांगण में एक बड़ा सा सत्संग भवन, एक हवन कुंड और एक सुन्दर गार्डन के अलावा कई अन्य छोटे- छोटे मन्दिर भी है । बाबा गौरी शंकर महादेव मन्दिर में आप मन्दिर प्रबंध समिति से अनुमति लेकर रुद्राभिषेक भी कर सकते हैं । कहा जाता है कि, बाबा गौरी शंकर महादेव मंदिर का शिवलिंग एक स्वयंभू शिवलिंग है जिसकी पूजा राजा हर्ष के काल से हो रही है । इस मंदिर में भगवती दुर्गा, सूर्य देव सहित कई प्रतिमाये हैं, तो आप गौरी शंकर महादेव मन्दिर अवश्य आये ।



श्री राधा बाँके बिहारी मन्दिर : बाबा गौरी शंकर मन्दिर और क्षेमकली देवी मन्दिर के समीप ही बना यह भव्य मंदिर बहुत ही आकर्षक है इसकी बनावट अत्यंत सुन्दर है तो यहाँ भी आप हो ले क्योंकि यह आपको रास्ते में ही मिलेगा जब आप गौरी शंकर जाओगे बिल्कुल झेमकली देवी के पास स्थित है ।



क्षेमकली मन्दिर : माँ क्षेमकली देवी का मंदिर भी कन्नौज में काफी जाना माना है । यह मंदिर बाबा गौरी शंकर मन्दिर के समीप है एवं कहा जाता है कि इस मन्दिर के कपाट खुलने से पहले ही यहाँ पूजा अर्चना हो जाती है । मन्दिर प्रांगण में हनुमान मन्दिर, लक्ष्मीनारायण मन्दिर, संतोषी माता मन्दिर, भद्रकाली मन्दिर, राधा-कृष्ण मन्दिर, शनिदेव मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, प्राचीन पीपल और बरगद का पेड़ स्थित है । कन्नौज के स्थानीय लोगो में क्षेमकली देवी के प्रति अपार श्रद्धा है ।

पुरातत्त्व संग्रहालय : यह संग्रहालय कन्नौज में जीटी रोड पर स्थित है यहाँ आपको कन्नौज से सम्बंधित तमाम जानकारीयां मिल जाएँगी । इस संग्रहालय में आपको राजा हर्ष, राजा जयचंद का इतिहास जानने को मिलेगा । कन्नौज में शहर में किस तरह इत्र का निर्माण होता है, यह भी संग्रहालय में जाकर आसानी से जान पाएंगे, तो आप इस स्थल को जरूर देखे ।



राजा जयचंद का किला : यह शहर का प्रसिद्ध किला कहा जाता है जो राजा जयचंद का है । परन्तु अब इस स्थल पर कुछ भी नहीं बचा है, रोड की तरफ राजा जयचंद की प्रतिमा लगी हुई है । वही से आप चाहो तो ऊपर चढ़कर जा सकते हैं किले के नाम पर ऊपर एक मैदान सा है । हाँ ये अलग

बात की ये मैदान काफी ऊँचाई पर है तो ऊपर जाकर आप को कन्नौज के पूरे दर्शन हो जायेंगे और एक सुन्दर सा 'व्यू' मिल जायेगा ।

माँ अन्नपूर्णा मन्दिर : शहर से मात्र 13-14 किलोमीटर पर तिर्वा में माँ अन्नपूर्णा मन्दिर है। स्थानीय लोग इसे सिद्धपीठ कहते हैं । यह 16वीं शताब्दी में बना सुन्दर मन्दिर है । मन्दिर परिसर में तमाम खिलौनों एवं प्रसाद की दुकानें हैं । इस मंदिर की मान्यता है की यहाँ बने एक हाथी के मुख में कोई भी जब प्रसाद फेंकता और यदि वह प्रसाद मुख के अन्दर चला जाये तो फेंकने वाले की मनोकामना अवश्य पूरी होती है । यहाँ एक और चमत्कार है कि इस मन्दिर के 3 ओर छोटे छोटे हाथी बने हुए और इन हाथियों को जब आप दो-तीन बार गिनोगे तो हर बार संख्या अलग आएगी।

मखदूम जहानिया : मखदूम जहानिया कन्नौज के बजरिया सिखाना मोहल्ले में स्थित एक एतिहासिक ईमारत है और यह काफी ऊँचाई पर बनी है इस स्थल पर मकबरे हैं और मकबरों में मजारे बनी हुई हैं । यह जगह अत्यंत शान्त है यहाँ एक मस्जिद भी बनी हुई है और इस ईमारत को 52 खम्भों के नाम से भी जानते हैं क्योंकि इस ईमारत में 52 खम्भे बने हुए हैं । यह पूरी ईमारत केसरिया और भूरे पत्थरों से बनी हुई है । यहाँ आप जरूर जाये एक गज़ब का सुकून यहाँ आपको मिलेगा ।



लाख बहोसी पक्षी विहार : लाख बहोसी पक्षी विहार कन्नौज मुख्यालय से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक विशाल अभयारण्य है जो की लाख और बसोही गाँव में है । हालाँकि इस स्थल पर सुविधाओं की ढेरो कमियाँ हैं । लेकिन यदि आप एक पक्षी प्रेमी हैं तो आप यहाँ जरूर जाये इस पक्षी विहार की दोनों झीलें और तालाब अत्यंत सुन्दर हैं । जब आप माँ अन्नपूर्णा के दर्शन करने तिर्वा आओ तो साथ में इसको भी देख सकते हो क्योंकि ये तिर्वा के आगे है ।

माँ फूलमती देवी मन्दिर : कन्नौज शहर के इस प्रसिद्ध मंदिर की मान्यता है की जब माता फूलमती को स्नान कराया जाता है और स्नान कराये हुए नीर से तमाम बीमारियाँ खासकर आँखों से सम्बंधित ठीक हो जाती है । इस मंदिर परिसर में तमाम प्रसाद की दुकानें सुसज्जित रहती हैं यहाँ नवरात्र में तो बहुत ज्यादा भीड़ रहती है । माता फूलमती देवी मंदिर कन्नौज में मकरंद नगर रोड पर स्थित है इस मन्दिर की स्थानीय लोगों में बहुत मान्यता है ।



मेहंदी घाट (कन्नौज का गंगा घाट) : कन्नौज शहर से महज 9-10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है मेहंदी घाट यहाँ तक आने के लिए आपको बस स्टैंड से टेम्पो मिल जायेंगे यह एक गंगा घाट है जहाँ श्रद्धालु माँ गंगा में आस्था की डुबुकी लगाते हैं यहाँ आप नौका विहार का भी आनंद ले सकते हैं । इसके अलावा इस मेहंदी घाट के समीप ही एक बेहद साफ़ सुथरा मन्दिर बना है जिसका नाम श्री सर्वेश्वर महादेव मन्दिर है । मेहंदी घाट के



समीप ही एक शिवजी की प्रतिमा बनी है जिसके भी आप दर्शन कर सकते हैं यहाँ बैठ के आप माँ गंगा के दर्शन कर सकते हैं ।

खानपान और खरीददारी : देखिये खानपान की बात करे तो इस शहर में उत्तर भारतीय व्यंजन परोसे जाते हैं लेकिन यदि किसी शहर में कुछ स्पेशल होता है तो उसे हम कवर करते हैं और **“कन्नौज का गट्टा”** अत्यंत फेमस है वही शापिंग में कन्नौज में परफ्यूम के अलावा और किसी वस्तु बाबत बात करना सही नहीं है । जब मैंने एक स्थानीय से कन्नौज के गट्टे के बारे में पूछा तो उन्होमे बताया की यहाँ की एक गट्टे की बहुत ही प्रसिद्ध दूकान है कलावती गट्टा भण्डार तो हम आए ‘कलावती गट्टा भण्डार’ और लिया स्वाद गट्टे का निःसंदेह गट्टा स्वादिष्ट था । इनके यहाँ जो गट्टा मैंने देखा उमसे मिठास तो बेहतरीन थी । साथ में इसमें सारे मेवा जैसे काजू बादाम किशमिश पिस्ता लगे हुये थे, जो मुंह में रखते ही यह गट्टा बड़ी आसानी से घुल रहा था अतः आप कन्नौज का गट्टा अपने घर अवश्य ले जाये ।



कन्नौज का इत्र : यहाँ परफ्यूमरी प्रशिक्षण केंद्र भी है । इस शहर की गलियों में भी इत्र की खुशबू आती है और आये भी क्यों न यहाँ ‘इत्र’ जो बनता है । कन्नौज को यँही **परफ्यूम कैपिटल ऑफ़ इंडिया** नहीं कहा जाता । मुख्य बाज़ार में ढेर सारी इत्र की दुकानें देखी । खैर दुकानों को जाने दीजिये वह गली ही बड़ी खुशबूदार है । इस मार्केट में फूलों, मिट्टी, जड़ी बूटियों के परफ्यूम मिलते हैं यहाँ आज भी इत्र बनाने की पुरानी टेक्नोलोजी का उपयोग अधिक किया जा रहा है । इत्र के साथ साथ आप यहाँ से धूपबत्ती, गुलाबजल भी ले सकते हो यह सब भी कन्नौज में बनाया जाता है अगर आप कन्नौज आ रहे हैं तो इत्र जरूर खरीदिएगा क्योंकि इत्र यहाँ बनाया जाता है । परफ्यूम कैपिटल ऑफ़ इंडिया के नाम से प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश का यह शहर कन्नौज जिले में आपको घूमने के लिये ज्यादा तो कुछ नहीं मिलेगा लेकिन यदि आपको इतिहास और ‘इत्र’ पसन्द है और आप एक खोजी किस्म के घुमक्कड़ हो तो आपको कन्नौज शहर कदापि निराश नहीं करेगा । इस शहर में कई जाने माने मन्दिर हैं कुछ दूरी पर एक पक्षी विहार है, गंगा नदी है, स्वादिष्ट गट्टा है, ऐतिहासिक जर्जर किले हैं, प्रसिद्ध मस्जिद/मकबरे हैं और इन सबके अलावा कन्नौज का ‘इत्र’ तो है ही । एक सच्चे घुमक्कड़ी को अवश्य पसन्द आएगा । इसके अलावा **‘कन्नौज का गट्टा’** भी लाजवाब है खाके देखिएगा । अगर आपको मीठा पसन्द है तो यह आपको जरूर पसंद आएगा । यहाँ माँ अन्नपूर्णा मन्दिर, माँ फूलमती देवी मन्दिर, मखदूम जहानियाँ, संग्रहालय, लाल बहोसी पक्षी विहार, गौरी शंकर मंदिर के प्रमुख आकर्षण हैं ।



संतोष कुमार वर्मा,
सहायक कार्मिक अधिकारी,
भावनगर परा

धार्मिक पर्यटन स्थल - तिरुपति एवं तिरुमला

तिरुपति और तिरुमला दक्षिण भारत के आध्यात्मिक और पर्यटन स्थलों में से एक हैं। श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर भारत के आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले में तिरुमाला की पहाड़ियों में समुद्र तल से 853 मी. की ऊंचाई पर स्थित है। तिरुमला की ऊंचाई और वास्तविक सौंदर्य वहाँ के पर्यटकों को काफी प्रभावित करता है। यह मंदिर विष्णु के एक रूप वेंकटेश्वर को समर्पित है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे मानव जाति को कलियुग की परीक्षाओं और परेशानियों से बचाने के लिए पृथ्वी पर प्रकट हुए थे। इसलिए इस स्थान का नाम कलियुग वैकुंठ भी है और यहां के देवता को कलियुग प्रत्यक्ष दैवम कहा जाता है। इस मंदिर को तिरुमाला मंदिर, तिरुपती मंदिर और तिरुपति बालाजी मंदिर जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता है। वेंकटेश्वर को कई अन्य नामों से जाना जाता है: बालाजी, गोविंदा और श्रीनिवास ।



भगवान श्री वेंकटेश्वर बाला जी महाराज का मुख्य मंदिर

मंदिर तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम् (टीटीडी) द्वारा चलाया जाता है, जो आंध्र प्रदेश सरकार के नियंत्रण में है। तिरुमाला पहाड़ियाँ शेषचलम पहाड़ी श्रृंखला का हिस्सा हैं। इनमें सात चोटियाँ शामिल हैं, जो आदिशेष के सात प्रमुखों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह मंदिर सातवीं चोटी-वेंकटाद्रि, श्री स्वामी पुष्करिणी, एक पवित्र जल कुंड के दक्षिणी तट पर स्थित है इसलिए मंदिर को "सात पहाड़ियों का मंदिर" भी कहा जाता है।

वेंकटेश्वर का मंदिर थोंडामन राजा द्वारा बनाया गया था और चोलों, पांड्यों और विजयनगर द्वारा समय-समय पर सुधार किया गया था। मंदिर का निर्माण दक्षिण भारतीय वास्तुकला में किया गया है और माना जाता है कि इसका निर्माण 300 ई.पू. की कालावधि में हुआ है।

मंदिर परिसर में तीर्थयात्रियों की भीड़ को प्रबंधित करने के लिए दो आधुनिक क्यू कॉम्प्लेक्स इमारतें हैं, तीर्थयात्रियों को मुफ्त भोजन के लिए तारिगोंडा वेंगमाम्बा अन्नप्रसादम परिसर, बाल मुंडन भवन और कई तीर्थयात्रियों के रहने की जगहें हैं। यहाँ पर बाल दान करने का बहुत महत्व है, मान्यता है कि बाल दान करने से भगवान श्री वेंकटेश्वर का कर्ज कम होता है। प्राप्त दान और धन के मामले में यह मंदिर दुनिया के सबसे अमीर मंदिरों में से एक है। तिरुमाला, तिरुपति में वेंकटेश्वर मंदिर की कुल संपत्ति ₹2.5 लाख करोड़ से भी अधिक होने का अनुमान है। इसमें भूमि, भवन, बैंकों में नकदी और सोना जमा शामिल है, जो भक्तों द्वारा मंदिर को प्रसाद के रूप में दिया जाता है।

यह मंदिर दुनिया के सबसे अधिक देखे जाने वाले धार्मिक स्थलों में से एक है, जो सालाना लगभग 24 मिलियन भक्तों को आकर्षित करता है। औसत दैनिक तीर्थयात्री 60,000 भक्तों से ऊपर है, और वार्षिक ब्रह्मोत्सव, वैकुंठ एकादशी, और अन्य त्यौहार और छुट्टियों के मौसम के दौरान यह संख्या एक लाख भक्तों को पार कर जाती है।

तिरुमला की पहाड़ियों पर स्वच्छता का खास ख्याल रखा जाता है। वहाँ का वातावरण हमें बिल्कुल स्वर्ग का अहसास कराता है। ऐसा लगता है मानो किसी अलग दुनिया में आ गए हों। वहाँ का वातावरण बिल्कुल धार्मिक एवं मनोरम है। मंदिर में हो रहे मंत्रोच्चारण पूरा दिन सभी श्रद्धालुओं के कानों में गुंजता रहता है और लोग मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं। तिरुपति मंदिर का इतिहास बहुत प्राचीन है और यहाँ का विशाल गोपुरम् (द्वार) और अन्य संग्रहालय देखने लायक हैं।

पहली बार दिसंबर 2022 में जब मैं एक आधिकारिक दौरे पर गुंतकल मंडल गया था तब हमें वहाँ से तिरुमला जाने का अवसर प्राप्त हुआ और भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तभी मैंने इच्छा व्यक्त की थी कि पुनः शीघ्र ही सपरिवार भगवान श्री वेंकटेश्वर के चरणों में आऊंगा ।

अंततः 8 अप्रैल, 2024 को यह सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। मैंने पूरे परिवार के सदस्यों एवं माता-पिता के साथ भगवान श्री वेंकटेश्वर के दर्शन किए। माता-पिता एवं परिवार के सदस्यों के चेहरे पर प्रसन्नता देखकर मेरा मन भी प्रफुल्लित था। भगवान श्री वेंकटेश्वर का मुख्य मंदिर तिरुपति से 26 कि.मी. दूर तिरुमला पहाड़ी पर स्थित है। तिरुपति शहर से तिरुमला पहुँचने के लिए ट्रस्ट की प्रत्येक पाँच से दस मिनट पर ए.सी. एवं नॉन-ए.सी. बस सुविधा उपलब्ध है तथा आप निजी वाहन का भी उपयोग कर सकते हैं। भारत के विभिन्न शहरों से तिरुपति पहुँचने के लिए कई विकल्प मौजूद हैं:-

रेल मार्ग: तिरुपति का रेलवे स्टेशन (Tirupati Railway Station) भारतीय रेलवे के मुख्य लाइनों में से एक है। अनेक ट्रेनें यहाँ से विभिन्न शहरों से जुड़ती हैं। रेनिगुंटा जंक्शन जहाँ से तिरुपति की दूरी मात्र 10 कि.मी. है, पहुँचा जा सकता है।

हवाई मार्ग: रेनिगुंटा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (Renigunta International Airport) है, जो तिरुपति से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। आप यहाँ से टैक्सी या बस का इस्तेमाल करके तिरुपति तक पहुँच सकते हैं।

सड़क मार्ग: तिरुपति को रोड-वे नेटवर्क से अच्छी तरह से जोड़ा गया है। नेशनल हाइवे NH 71 और NH 140 इसे अन्य शहरों से जोड़ते हैं। यात्री खुद की गाड़ी, बस या प्राइवेट टैक्सी का इस्तेमाल करके तिरुपति पहुँच सकते हैं।

बस सेवा: आंध्र प्रदेश राज्य परिवहन निगम (APSRTC) और अन्य निजी ऑपरेटर्स कई स्थानों से तिरुपति तक बस सेवा प्रदान करते हैं। बस सेवा लगभग सभी अधिकतम शहरों और नगरों से उपलब्ध है।

श्री वेंकटेश्वर बाला जी मंदिर, तिरुमला के अलावा तिरुपति शहर में भी कई प्राचीन मंदिर हैं कुछ मंदिरों की बनावट एक दूसरे से मिलती जुलती है। इन स्थानीय मंदिर का दर्शन करने में आपको 5 से 6 घंटे लगते हैं।

i) श्री पद्मावती मंदिर भगवान वेंकटेश्वर की पत्नी देवी अलामेलु (पद्मावती) या अलामेलुमंगा को समर्पित मंदिर है। इस मंदिर में आप एक से दो घंटे में दर्शन कर सकते हैं ।

ii) गोविंदराजा मंदिर श्री गोविंदराजा स्वामी को समर्पित मंदिर है, जिन्हें भगवान वेंकटेश्वर का भाई माना जाता है। मंदिर का अभिषेक वर्ष 1130 ई. में वैष्णव संत रामानुजाचार्य द्वारा किया गया था। श्री गोविंदराज स्वामी से पहले, श्री पार्थसारथी स्वामी मंदिर के पीठासीन देवता थे। यह मंदिर शहर के मध्य में स्थित है। इसमें 11 कलशों वाला लंबा सात मंजिला बाहरी गोपुरम है और यह 14-15वीं शताब्दी का है। यह मंदिर चित्तूर जिले के विशाल मंदिरों में से एक है।

iii) कपिला तीर्थम, तिरुपति में कपिला मुनि के नाम पर रखा गया पवित्र जलप्रपात है। यह कपिलेश्वर मंदिर की मेजबानी करता है जो भगवान शिव को समर्पित है और देवता को कपिलेश्वर कहा जाता है। पानी का झरना पहाड़ी चट्टानों से सीधे मंदिर के सामने तालाब में गिरता है। मंदिर और झरनों को अत्यधिक भक्तिमय माना जाता है। मंदिर के देवता की महानता 10वीं शताब्दी के कुलोथुंगा चोल शिलालेखों में पाई गई थी।

iv) भगवान राम सीता और लक्ष्मण मंदिर- 10वीं सदी का यह मंदिर विष्णु के अवतार भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ समर्पित है। वराह पुराण के अनुसार, त्रेता युग के दौरान, राम ने लंकापुरी से लौटने पर सीता और लक्ष्मण के साथ यहीं निवास किया था।

v) थथैयागुंटा गंगम्मा मंदिर, तिरुपति की ग्रामदेवता, देवी गंगम्मा को समर्पित मंदिर है। यह मंदिर प्राचीन मंदिरों में से एक है और शहर के केंद्र में है। मंदिर की गतिविधियों की देखरेख थथैया गुंटा गंगम्मा देवस्थानम द्वारा की जाती है।

vi) राधा गोविंदा टेंपल इस मंदिर को इसके डिज़ाइन के कारण लोटस टेम्पल और हरे कृष्ण मंदिर भी कहा जाता है।

vii) वकुला देवी भगवान वेंकटेश्वर की पालक मां हैं। उनके नाम पर मंदिर लगभग 300 साल पहले तिरुमला पहाड़ियों के 10 किलोमीटर के भीतर, सुंदर पेरूरु के आसपास, पेरूरुबंद पहाड़ी पर बनाया गया है। वकुला माता (मां) की इच्छा के अनुसार, इस मंदिर का निर्माण इस तरह किया गया है कि माता का दृश्य सात पहाड़ियों की ओर हो, जहां उनके पुत्र भगवान वेंकटेश्वर निवास करते हैं।

8 अप्रैल 2024 को भगवान श्री वेंकटेश्वर के दर्शन के बाद हमने 9 अप्रैल 2024 को तिरुपति के स्थानीय मंदिरों का दर्शन का कार्यक्रम रखा था, इसी दिन तेलगू न्यू ईयर भी था, सभी मंदिरों को ताजे फूलों से सजाया गया था, तो कुछ मंदिरों में वहाँ की पारंपरिक रीति-रिवाज से भगवान की भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गई थी, यह सब देखकर मन आनंदित हो गया।

भगवान श्री वेंकटेश्वर मंदिर और उसके संबंधित स्थलों के प्रबंधन, विकास, और संरक्षण की ज़िम्मेदारी तिरुमला तिरुपति देवस्थानम ट्रस्ट (Tirumala Tirupati Devasthanams Trust) की है। तिरुपति देवस्थानम ट्रस्ट का मुख्य कार्य धार्मिक कार्यों का संचालन करना है, जिसमें मंदिर में पूजा, आरती, अनुष्ठान, और अन्य धार्मिक कार्यक्रम शामिल हैं। इसके अलावा, ट्रस्ट यात्रियों और पर्यटकों के लिए सुविधाओं का प्रबंधन भी करता है। तिरुमला में सभी श्रद्धालुओं के लिए सुबह, दोपहर और रात्रि का भोजन की व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा की जाती है, वहाँ एक साथ हजारों श्रद्धालुओं के बैठने की व्यवस्था है। वहाँ के सभी धार्मिक स्थल पर्यटकों को एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं। ट्रस्ट की मुख्य वेबसाइट है tirumala.org है, जिस पर जाकर आप सभी तरह की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

तिरुमला पहाड़ी पर एक साथ हजारों श्रद्धालुओं के लिए ठहरने की व्यवस्था है, जिसकी बुकिंग ऑनलाइन और ऑफलाइन भी की जाती है। 100 रु. प्रति कमरे से लेकर 5000/-रु. प्रति तक के कमरे उपलब्ध हैं, जो सिर्फ ट्रस्ट द्वारा संचालित होते हैं। तिरुमला में किसी भी निजी व्यक्ति को होटल संचालन की अनुमति नहीं है। तिरुपति में भी ट्रस्ट के कई स्थानों पर गेस्ट हाऊस सुविधा उपलब्ध है, जिसकी बुकिंग ऑनलाइन और ऑफलाइन की जाती है। ट्रस्ट का कमरा जब आप चेक-इन करते हैं उस समय से 24 घंटे के लिए आरक्षित रहता है। कमरे की बुकिंग को एक्सटेंशन करने का प्रावधान नहीं है। यदि आपके द्वारा समय पर चेक आउट नहीं किया गया तो पैनल्टी का प्रावधान है। आपको रु. 1000/- में एसी कमरा, अटैच बाथरूम, दो बेड, जिसमें 5 सदस्य आराम से रह सकते हैं, उपलब्ध है। कमरे की साफ-सफाई एवं लीनेन आदि किसी निजी होटल से कम नहीं है।

तिरुपति और तिरुमला की यात्रा के लिए आपको एडवांस में योजना बनानी चाहिए ताकि आपको ऑनलाइन विशेष दर्शन टिकट एवं आवास की बुकिंग आसानी से मिल सके। यदि आपको विशेष दर्शन टिकट मिल जाती है तो आपकी यात्रा काफी सुविधाजनक हो जाएगी। इसके लिए दो माह पूर्व से आपको ऑफिसियल वेबसाइट tirumala.org पर दिए गए दिशा-निर्देशों का अनुपालन करना होगा। जिस दिन आपको भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन की बुकिंग मिलता है उससे एक दिन पूर्व तिरुपति अवश्य पहुँचे तथा दर्शन के दूसरे दिन वहाँ से प्रस्थान का कार्यक्रम रखें।

मैंने 8 अप्रैल 2024 को भगवान वेंकटेश्वर दर्शन की योजना बनाई थी जिसका ऑनलाइन बुकिंग 24 जनवरी-2024 को ओपन हुआ और 10-15 मिनट में विशेष दर्शन टिकट एवं गेस्ट हाऊस फुल हो गया था। चूँकि मैं पहले से सतर्क था, मैंने सबसे पहले विशेष दर्शन टिकट जो कि प्रति व्यक्ति 300/- रु. है, बुक किया एवं दर्शन बुकिंग के अनुसार तिरुपति एवं तिरुमला में ट्रस्ट का गेस्ट हाऊस भी बुक किया। यदि आपका ऑनलाइन दर्शन टिकट बुक हो जाता है तो आपको श्री वेंकटेश्वर मुख्य मंदिर का दर्शन के लिए 3 से 5 घंटे का समय लगेगा। यदि आप बिना बुकिंग के सामान्य लाइन में जाते हैं तो परिस्थिति अनुसार 8 से 12 घंटे या इससे ऊपर का समय लग सकता है। विशेष दर्शन टिकट पर प्रत्येक श्रद्धालु को वहाँ का प्रसिद्ध घी का लड्डु प्रसाद के रूप में दिया जाता है। यदि अतिरिक्त लड्डु चाहिए तो 50 रु. प्रति लड्डु भुगतान करके ले सकते हैं।

यदि आपने तिरुपति में ऑनलाइन गेस्ट हाऊस बुक किया है तो तिरुपति का मुख्य गेस्ट हाऊस श्रीनिवास गेस्ट हाऊस है, जहाँ आपको रिपोर्ट करना है और यदि तिरुमला में किया है तो एआरपी काउंटर, सीआरओ ऑफिस, तिरुमला रिपोर्ट करना है। वहाँ से आपको आपका गेस्ट हाऊस और कमरा नं आबंटित किया जाता है। शहर में अलग अलग स्थानों पर कई गेस्ट हाऊस हैं, किसी भी एक गेस्ट हाऊस में आपको कमरा मिल सकता है। यह उपलब्धता के आधार पर होता है।

ट्रस्ट का उद्देश्य है कि यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। तिरुपति मंदिर का प्रबंधन बहुत ही सावधानीपूर्वक और धार्मिक भाव से किया जाता है। ट्रस्ट अपने कार्यों में पारंपरिक और आधुनिक प्रणाली को मिलाकर चलाने का प्रयास करते हैं, ताकि लोगों को सुविधाएं मिल सकें और उनकी धार्मिक आवश्यकताओं को संतुष्ट किया जा सके। “जय गोविंदा”



हार्दिक धींग ,
वरि. लिपिक,
वाणिज्य विभाग

तब ईश्वर याद आते हैं

बचपन में -

बचपन की नादानियों में,
कुछ गलती हो जाने पर,
जब बहुत डर- से जाते हैं,
तब ईश्वर याद आते हैं।

करियर में -

नौकरी की तलाश में,
परिवार से दूर जब,
खुद को अकेला पाते हैं,
तब ईश्वर याद आते हैं।

भेदभाव में -

आपस के भेदभाव में,
सत्कर्म को भूल जाते हैं,
जब खुद का नुकसान पाते हैं,
तब ईश्वर याद आते हैं।

अंत समय में -

अंत समय जब आता है,
कर्मों के प्रायश्चित्त करने को,
बहुत कम समय बचा पाते हैं,
तब ईश्वर याद आते हैं।

परीक्षा में -

स्पर्धा के ज़माने में,
हमेशा अक्ल आने को,
मन ही मन घबराते हैं,
तब ईश्वर याद आते हैं।

मुसीबत में -

मुसीबत की घड़ी में,
सब रास्ते बंद हो जाते हैं,
केवल खुद को उलझा पाते हैं,
तब ईश्वर याद आते हैं।

खुशियों में -

भौतिकता के संसार में,
खुशियों की लालसा को,
जब पूरा होते पाते हैं,
तब ईश्वर याद आते हैं।

उत्कृष्ट कार्य के लिए भावनगर मंडल के 4 कर्मचारी मरेप्र पुरस्कार(DRM Award) से सम्मानित



रेलवे कार्य प्रणाली में उत्कृष्ट कार्य के लिए भावनगर मंडल के 4 कर्मचारी मरेप्र पुरस्कार (DRM Award) से सम्मानित किए गए। श्री रवीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर ने कर्मचारियों द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य को ध्यान में रखकर उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। रेल संरक्षा एवं प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्य के लिए इन कर्मचारियों को यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। सभी कर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक श्री रवीश कुमार द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री सी. आर. गरुड़ा उपस्थित थे।

पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों का विवरण इस प्रकार है:-

श्री सतीश जी. (कांटेवाला-बोटाद)

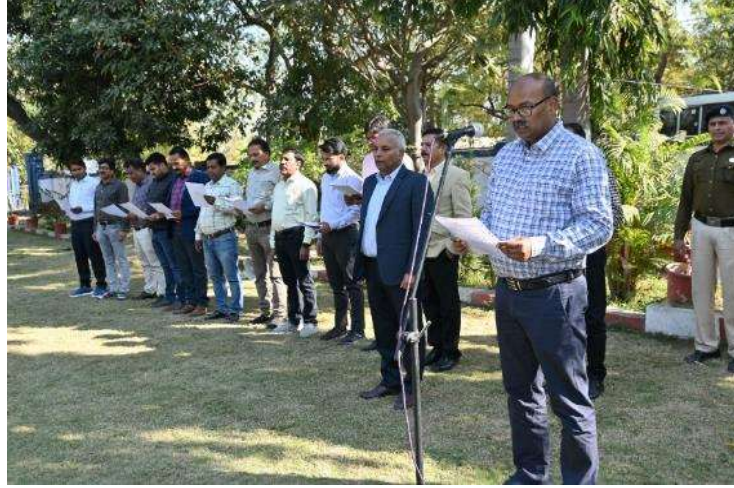
श्री राजेंद्र एच. ठक्कर (सीटीएनएल, भावनगर परा)

श्री जितेन्द्रसिंह सी. झाला (सीटीएनएल, भावनगर परा)

श्री राधा मोहन (कांटेवाला / गेट मैन-निंगाला)

उपरोक्त रेलकर्मियों ने सतर्कता व सजगता से कार्य करते हुए संभावित रेल हादसा रोकने एवं कार्य प्रणाली को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, जिसमें ट्रेन प्रबंधन प्रणाली में उत्कृष्ट भूमिका निभाना, कंटिन्यू स्पार्किंग (चिंगारी) को नोटिस करना एवं हैंगिंग पार्ट को नोटिस करना इत्यादि घटनाएँ शामिल हैं।

मतदाता दिवस



राष्ट्रीय मतदाता दिवस के मौके पर मंडल कार्यालय में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में डीआरएम श्री रवीश कुमार एवं एडीआरएम श्री हिमांशु शर्मा समेत अन्य अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए।

भावनगर मंडल के स्टेशनों पर भी शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में स्टेशन पर कार्यरत कर्मचारी, सुपरवाइजर एवं अधिकारीगण शामिल हुए।

सभी ने देश के लोकतंत्र में पूर्ण आस्था रखते हुए लोकतांत्रिक परंपराओं, मर्यादाओं को बनाए रखने एवं स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना अपने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ ली।

भावनगर मंडल पर पूरे उत्साह के साथ मनाया गया 75वाँ गणतंत्र दिवस



भावनगर मंडल पर 75वां गणतंत्र दिवस, दिनांक 26.01.2024 को मनाया गया। इस अवसर पर श्री रवीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर ने रेलवे स्टेडियम, भावनगर परा में राष्ट्रीय ध्वज को फहराया तथा झंडे को सलामी दी। वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री रामराज मीणा की आगवानी में भारत स्काउट एवं गाइड, सेंट जॉन एम्ब्युलेंस, नर्सिंग यूनिटों व रेलवे सुरक्षा बल के जवानों ने इस अवसर पर परेड की और मनोहर झांकी प्रस्तुत की। इस अवसर पर मंडल के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में मंडल रेल प्रबंधक श्री रवीश कुमार एवं पश्चिम रेलवे महिला कल्याण समिति-भावनगर मंडल की अध्यक्ष श्रीमती संतोषी जी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में उत्कृष्ट योगदान देने वाले कर्मचारियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुति देने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया।

रेलवे कर्मचारियों की मदद से रेलयात्री को 10 लाख रुपये से अधिक मूल्य के जेवरात से भरा बैग वापस मिला



पश्चिम रेलवे भावनगर मंडल रेल यात्रियों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहता है। मंडल पर “आपरेशन अमानत” अभियान भी चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत रेल यात्रियों के खोये हुए सामानों को उन्हें सौंपने का कार्य रेलवे सुरक्षा बल द्वारा किया जाता है। इसी तरह का एक मामला प्रकाश में आया है।

श्री अजय कुमार गुप्ता जो सेन्ट्रल बैंक ओफ इंडिया में बैंक मैनेजर हैं, अपने परिवार के साथ प्रयागराज जंक्शन से अहमदाबाद जंक्शन के लिए 31 जनवरी, 2024 को ट्रेन नंबर 12946 बनारस-वेरावल सुपरफास्ट में बैठे थे। उनकी बेटी की शादी 27 जनवरी, 2024 को हुयी थी, जिसका रिसेप्शन अहमदाबाद में 01 फरवरी, 2024 को होना था, उसके लिए वे जा रहे थे। अहमदाबाद में उतरते समय उनका एक बैग बोगी नंबर B3 में ही गलती से छूट गया था। उस बैग में कीमती जेवरात जो लगभग 10 लाख रुपये से ऊपर का था, रखा गया था। ट्रेन अहमदाबाद स्टेशन से प्रस्थान कर चुकी थी।

उन्होंने तुरंत रेलवे के कर्मचारियों एवं अधिकारियों से संपर्क किया। भावनगर रेलवे मंडल के वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री सी. आर. गरुड़ा को जब इसकी जानकारी हुयी तो उन्होंने तुरंत गांधीग्राम के स्टेशन मास्टर से संपर्क किया। रेलवे कर्मचारी यातायात निरीक्षक गांधीग्राम श्री चंद्रभान मेहरा व स्टेशन मास्टर श्री हर्षद मकवाणा को यात्री द्वारा बताए गये कोच में ढूँढने पर बैग सही सलामत मिल गया। रेलवे कर्मचारियों ने बैग यात्री से संपर्क कर वापस कर दिया।

यात्री द्वारा समस्त जेवरात सही पाया गया। उनके द्वारा इस उत्कृष्ट कार्य के लिए रेल प्रशासन, संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारियों की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई, जिनके प्रयास एवं ईमानदारी की वजह से उनका सामान मिला।

मंडल रेल प्रबंधक श्री रवीश कुमार एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमांशु शर्मा ने भी स्टेशन मास्टर गांधीग्राम एवं समस्त टीम की प्रशंसा की।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल द्वारा किड्स हट स्कूल एवं बाल मंदिर के लिए “आशाएं - 2024” कार्यक्रम का आयोजन किया गया



पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल द्वारा संचालित किड्स हट एवं बाल मंदिर के नन्हें - मुन्हें बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु उत्कृष्ट प्रयासों की श्रृंखला में अध्यक्षा श्रीमती संतोषी जी की देखरेख में झवेरचंद मेघाणी ओडिटोरियम-भावनगर में दिनांक 15.02.2024 को “आशाएं - 2024” वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह दोनों स्कूल 35 वर्षों से चलते आ रहे हैं। इस कार्यक्रम में सभी बच्चों ने बहुत ही सुंदर प्रस्तुति देकर उपस्थित सभी लोगों का मन मोह लिया। सभी परफॉर्मेंस थीम बेस्ड परफॉर्मेंस थी। इस दौरान सत्र 2023-24 का पुरस्कार वितरण भी किया गया। सचिव श्रीमती प्रमिला प्रसाद द्वारा स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

“आशाएं – 2024”



इस कार्यक्रम में मंडल रेल प्रबंधक श्री रवीश कुमार मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमांशु शर्मा के साथ मंडल के वरिष्ठ अधिकारीगण तथा पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती मोनिका शर्मा, सेक्रेटरी श्रीमती प्रमिला प्रसाद, स्कूल इंचार्ज श्रीमती वंदना पाटीदार उपस्थित थीं।

ज्वाइंट सेक्रेटरी व स्कूल इंचार्ज श्रीमती शिवांगी जैन ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद किया।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल द्वारा महिला दिवस का आयोजन किया गया



पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल द्वारा महिला दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें मंडल की महिला रेल कर्मचारियों को विशेषकर पुरुष प्रधान कार्य क्षेत्र/केंडर में कार्यरत महिलाओं को सम्मानित किया गया। रेल प्रशासन में विभिन्न विभागों में कुछ श्रेणी जैसेकि गैंग, लोको पायलट, प्वाइंट्स मैन इत्यादि पद पर महिलाओं को सफलतापूर्वक अपने पद एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों में संतुलन बनाते हुए सफलतापूर्वक कार्य निष्पादन हेतु कुल 21 महिला कर्मचारियों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर एडवोकेट, लेखिका, कवयित्री एवं “स्त्रीयार्थ मूवमेंट” की प्रणेता सुश्री प्रतिभाबेन ठक्कर मुख्य वक्ता रहीं। इन्होंने “महिला सशक्तिकरण” विषय पर अपना वक्तव्य देकर अपना दृष्टिकोण रखा तथा वहां उपस्थित महिलाओं को मोटिवेट किया। अपने-अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाने तथा स्त्रियों को अपनी-अपनी जगह पर रहकर भी अपनी सोच में बदलाव द्वारा स्त्री समाज की उन्नति के माध्यम से स्त्रियों को सशक्त बनने के लिए आह्वान किया।

“ महिला दिवस ”



यह संपूर्ण कार्यक्रम पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की अध्यक्ष श्रीमती संतोषी जी के मार्गदर्शन एवं उनकी अध्यक्षता में संपन्न किया गया, जिसका संचालन पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की सचिव श्रीमती प्रमिला प्रसाद एवं ट्रेजरर ईशा गुप्ता द्वारा किया गया।

इस अवसर पर भावनगर मंडल पर विभिन्न पदों पर कार्यरत महिला कर्मचारी उपस्थित रहीं। पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की अध्यक्ष श्रीमती संतोषी जी ने सभी महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं।

"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" के उपलक्ष्य में भावनगर मंडल पर कार्यक्रम

श्री रवीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री हिमांशु शर्मा, अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव, पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की विशेष गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस अवसर पर श्री रवीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर सभी को शुभेच्छा दी एवं सभी महिलाओं के उत्कर्ष एवं उनकी प्रगति की सराहना की। इस अवसर पर, अध्यक्ष-पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन ने भी विविध क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान की सराहना की तथा रेल प्रशासन को इस अवसर पर सुंदर कार्यक्रम आयोजन करने पर बधाइयां दी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में स्थानीय हित निधि समिति (LSBF) के द्वारा भावनगर मंडल की सभी 280 महिलाओं को विशेष स्मृति चिन्ह अर्पण करके उनका बहुमान किया। इस कार्यक्रम में 11 महिलाओं को मंडल रेल प्रबंधक महोदय जी के कर-कमलों से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर, साइबर क्राइम के बढ़ते अपराध और उनके उपाय के विषय पर साइबर पुलिस स्टेशन, भावनगर रेंज, PSI श्री वी.डी.मेहता, टेक्निकल ऑपरेटर श्री जी. डी. राठोड़ एवं महिला हेड कांस्टेबल सुश्री इलाबेन पंड्या द्वारा मार्गदर्शन दिया गया।

आयुर्वेदिक डॉक्टर श्री अशोक कुमार त्रिवेदी द्वारा जीवन में आयुर्वेद का महत्व, आयुर्वेद का इतिहास एवं विविध ऋतु में आहार विहार के संबंध में आयुर्वेदिक परिप्रेक्ष्य में मार्गदर्शन दिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर श्री अमर सिंह सागर, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में कल्याण विभाग की टीम द्वारा यह आयोजन किया गया।

"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" के दिन भावनगर मंडल के जूनागढ़ स्टेशन के सभी विभागों के कार्य को महिला कर्मचारियों ने संभाला



पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल पर “अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस” नारी वंदन के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मंडल कार्यालय की महिला कर्मचारियों को जागरूक करने एवं उन्हें सशक्त बनाने के लिए सेमिनार का आयोजन किया गया। श्री रवीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर सभी को शुभेच्छा दी एवं सभी महिलाओं के उत्कर्ष एवं उनकी प्रगति की सराहना की।

“अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस” के अवसर पर 8 मार्च, 2024 को नारी सशक्तिकरण की दिशा में जूनागढ़ रेलवे स्टेशन पर अनूठी पहल की गई। इस दिन जूनागढ़ स्टेशन पर 57 महिला कर्मचारियों ने एक साथ कार्य किया। सुबह से दोपहर तक की पाली में, जूनागढ़ स्टेशन के सभी विभागों जैसे - अनारक्षित टिकट काउंटर, आरक्षण कार्यालय, सिग्नल व विद्युत कार्यालय, हेल्थ यूनिट, लोको लॉबी, टिकट चेकिंग, रेलवे सुरक्षा पोस्ट इत्यादि जगहों पर महिला कर्मचारियों ने कार्यभार सुचारु रूप से संभाला। इस प्रकार सभी ने साबित कर दिया कि महिलाएं अब सशक्त हो रही हैं। इस अवसर पर जूनागढ़ की महिला कर्मचारियों द्वारा महिला रेल यात्रियों को गुलाब का फूल देकर सम्मान किया गया।

“अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस” के अवसर पर सारंगपुर रेलवे स्टेशन पर भी सभी कार्य महिला कर्मचारियों द्वारा किया गया। भावनगर मंडल पर वर्तमान में कुल 279 महिला कर्मचारी कार्यरत हैं, जो विभिन्न विभागों में सेवाएं दे रही हैं।

विशेष खेल महाकुंभ 2.0 सत्र 2023-24 विकलांगता श्रेणी, भावनगर मंडल के दिव्यांग कर्मचारी की जिला स्तरीय खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन



दिव्यांगजनों के लिए जिला स्तरीय विशेष खेल महाकुंभ 2.0 का सत्र 2023-24 दिनांक:- 07 एवं 08 मार्च-2024 को माननीय प्रधानमंत्री एवं माननीय मुख्यमंत्री-गुजरात द्वारा प्रेरित खेल के क्षेत्र में दिव्यांग लोगों को प्रोत्साहित करने हेतु सिदसर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, भावनगर में आयोजित हुआ, जिसमें पराक्रमसिंह कनुभा गोहिल ने दिव्यांग श्रेणी 'डी', आयु वर्ग 16 से 35 वर्ष, पुरुषों के गोला फेंक और चक्र फेंक दोनों व्यक्तिगत स्पर्धाओं में पहला नंबर हासिल किया। इसके अलावा पैरा सिटिंग वॉलीबॉल के टीम इवेंट में भी पराक्रम सिंह कनुभा गोहिल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

ये नडियाद में खेले जाने वाले आगामी राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ में उपरोक्त सभी खेलों में भावनगर का प्रतिनिधित्व करेंगे। पराक्रमसिंह कनुभा गोहिल वर्तमान में रेलवे में मंडल रेल प्रबंधक-कार्यालय, भावनगर परा में वाणिज्यिक विभाग में मुख्य वाणिज्य क्लर्क के पद पर कार्यरत हैं।

इस स्तर पर उन्होंने 'दिव्यांग सारथी चैरिटेबल ट्रस्ट' के साथ मिलकर प्रैक्टिस की और ट्रस्ट के साथ-साथ भावनगर मंडल का भी नाम रोशन किया है। इनके द्वारा कुल पुरस्कार राशि रु:-13000/- जीती गई है। श्री रवीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक और सभी शाखा अधिकारियों ने उन्हें इस उपलब्धि के लिए बधाई दी और भविष्य में उनकी शानदार उपलब्धियों की कामना की।

ओखा-सोमनाथ एक्सप्रेस ट्रेन में युवक को आया हार्ट अटैक, टिकट चेकिंग स्टाँफ ने सीपीआर देकर बचाई जान



ओखा-सोमनाथ एक्सप्रेस ट्रेन (19252) में जेतलसर और जूनागढ़ के बीच भावनगर मंडल के टिकट चेकिंग स्टाँफ श्री चेतन के. देवाणी, मुख्य टिकट निरीक्षक, जूनागढ़ ड्यूटी पर थे, टिकट जाँच के वक्त जनरल कोच में एक पुरुष यात्री, जिसकी उम्र लगभग 45 से 50 साल होगी, बेहोश पड़ा था और उसके साथ कोई नहीं था।

उन्होंने तुरंत उसकी सांसों और पल्स चेक किया, पल्स मुश्किल से मिला, फिर उन्होंने सीपीआर (Cardio-Pulmonary Resuscitation) देना शुरू किया। उस दरमियान यात्री के फोन पर उसके किसी रिश्तेदार का फोन आया, जो उन्हें रिसीव करने के लिए जूनागढ़ स्टेशन पहुंचा हुआ था। फोन, टिकट चेकिंग स्टाँफ द्वारा रिसीव किया गया और यात्री की हालत से अवगत कराया गया। सीपीआर देते रहने की वजह से जूनागढ़ पहुंचने से पहले यात्री होश में आ गया। जूनागढ़ पहुंचने पर टिकट चेकिंग स्टाँफ द्वारा यात्री को उसके रिश्तेदार के हवाले कर दिया गया, जो उस समय बेहतर महसूस कर रहा था एवं अस्पताल ले जाने की सलाह भी दी गई। इस प्रकार समय रहते सीपीआर देने की वजह से एक व्यक्ति का अमूल्य जीवन बचाया जा सका। इस कार्य के लिए श्री रवीश कुमार, मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा, जिन्होंने इस घटना को जाना और रेल कर्मचारी की प्रशंसा की।

उत्कृष्ट कार्य के लिए भावनगर रेलवे मंडल के 4 कर्मचारियों को अपर मंडल रेल प्रबंधक ने सम्मानित किया



रेलवे कार्य प्रणाली में उत्कृष्ट कार्य के लिए भावनगर मंडल के 4 कर्मचारी अपर मंडल रेल प्रबंधक पुरस्कार (ADRM Award) से सम्मानित किए गए। श्री हिमांशु शर्मा, अपर मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर ने कर्मचारियों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्य को ध्यान में रखकर उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रशस्ति-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। रेलवे के विभिन्न विभागों में कर्मचारियों द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य के लिए यह अवार्ड प्रदान किया गया है।

अवार्ड प्राप्त करने वाले कर्मचारियों का विवरण इस प्रकार है: श्री शम्भू सिंह (जन संपर्क निरीक्षक/भावनगर मंडल), श्री डी. बी. पंडया (संरक्षा सलाहकार/भावनगर मंडल), श्री महेंद्र बोरीसागर (कोचिंग पर्यवेक्षक/पोरबंदर) एवं श्री धर्मेन्द्र कुमार पंडित (बिजली तकनीशियन/पोरबंदर)। मंडल रेल प्रबंधक श्री रवीश कुमार के साथ अन्य शाखा अधिकारियों ने सभी पुरस्कृत कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

श्री शम्भू सिंह ने वर्ष 2023-24 के दौरान ई-दृष्टि पोर्टल को समय सीमा में अपडेट करने का काम किया है। श्री डी.बी. पंडया ने वर्ष 2023-24 में विविध निरीक्षणों के दौरान दिये गए सभी प्रकार के कार्यों को कुशलतापूर्वक किया है। श्री धर्मेन्द्र कुमार पंडित एवं श्री महेंद्र बोरीसागर ने वर्ष 2023-24 में दिनांक 26.02.2024 को पोरबंदर में आयोजित अमृत भारत स्टेशन योजना के शिलान्यास समारोह में उत्कृष्ट कार्य संपादित किया है।

स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मार्च-2024 को समाप्त तिमाही की स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति - वेरावल, जूनागढ़, पोरबंदर, जेतलसर, धोला, बोटद, भावनगर परा एवं भावनगर टर्मिनस की तिमाही बैठकें निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न करा ली गई. सभी बैठकों में समीक्षा के पश्चात राजभाषा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया.



ધન્યવાદ

